

## Chapter - 5

१४३

पुकार : ५

### भजन वा अत्मवेतनानु अलियर

भजन वे कवितानु ज स्वरूप हैं। ये मर्म छहो रथनानु ऐसु शुक्ल अर्थ भहर्त्व नहीं। "कविता ऐसे भावु शुद्ध ये असरकारक छह रथन। ये म नहीं।"

सर्वांगशुद्ध नवरिय कविता को इपछु भाषामर्म घोड़ीक ज भले हैं, तो भजन पछु कवितानो ऐक स्वरूप छकार होवायी ऐसे पछु वे उकील गेटली ज स्पर्श हैं। अत्रिय शुद्ध सर्वांगभनोहर भजनमर्म ध्रुवपद, भाव, शब्दार्थ, अलकार, रस ने धनि वे वसु वा अत्मानी क्लाइपे पुकटे हैं। यामर्म क्यारेक ध्रुवपदनी यमतुलि भाषा भजनमर्म वेधक होय है। कवित भावनी सर्वांगनिष्पत्ति पुत्त्वेक प्रतिमर्म ने वे रीते समग्र भजनमर्म अनुसन्धाय हैं। क्यारेक ये मर्म वार्षु तथोजन क्लाइमक होय है, क्यारेक ये मर्म शतिरक्षनी अवधि चधाती होय ये म रसनु भाषोजन यसु होय है; तो क्यारेक धनि वे ज काव्यनो अत्मा यहने भजनमर्म अत्तरनो इत्यो ज्ञाने इरे हैं।

भजनमर्म ऐकाए वे प्रतितश्चो ज कवित्वनी मुद्रायी चधर होय है

"A very beautiful line is a very pure element of Poetry"।—पोत वालेरी वे कविता भाटे कहे हैं वे शुद्ध भजनमर्म पछु सार्यु हैं। वे रीते अहिदर, गोरण, नरसिंह, भीरू, अणो, धीरो, देवायत प्रतित, भोजो, गणासती, निष्ठुरानंद, प्रेमसच्ची, मार्कंड औष्ठि, हरण भाटी, भाषा-लोयषु, भर्तुहरी — गोपीरह, लेवा अनेक "अलभधरभी" भजनसर्वकोनां भजनो, भाव, शाषा, रस ने धनिनो इत्यत्रे भाषनमर्म येवां है, ये मर्म वी आर्द्धनी — शरवाणी इटे हैं। प्रेयनो पारावार अनुसन्धाय है, रसनी शतिरक्षमायि अनुसन्धाय है।

"अग्निव श्रह्मेत्तमर्म ऐक तु"नी अमेदश। ५३८ वाय है।—

"પ્રેમની કાર્યાલાય" ને લાગી હોય કે જ નેતી વેદના જાણે, જેમ જેણે પ્રાણી જીવની લાગે છે, જેણે આત્મભાવનું જીવ જન્મે છે, જીવન તો - વિવિધ દ્વારા જીવનની જીવનાન કી જાય છે જે પણ જાણી જ, જીવનમાં જેણી રસ ને દુષી છે, જેણે શુદ્ધ જીવનની વિભાગના માટે વિવાદમાં પડાણી જરૂર નથી, જરૂરી રીતે તો જીવન શુદ્ધ ને અશુદ્ધ જેમ કહેણું જ જરૂરો જ છે, કારણ કે જીવનદું, પ્રેમ ને શાશ્વત યોગ્યિતાનો અનુભાવ માટે કષ્ટનો જ ન હિંદું પણ જીવનનો જીવનની જાય જેવી માર્ગિક પણ તો જીવનમંડળીનો પણ પણ જીવનનો જ-માર્ગ છે. ત્યાં અશુદ્ધ ને દુષોધી જીવનો પણ જીવન-ચાન્તનાં મોજાણ જીવી રહે છે.

છત્રાંગ એક અલ્યાસ તરીકે વૈદિકદ્વારા વાં વિધાન જીવનની વિભાગનાંને પણ લાગુ પડી શકે છે;

"The experience of the poem is the experience both of a moment and of a life time."

ભક્તોને પસંદ કરેલ જીવનું માધ્યમ જેમના કાયને જીવું હૈ. કારણ જીવ જ ભક્તોને મન પોતાના "આત્માની માતૃભાવા"ની લાગે છે. જેદે જીવનની વ્યાખ્યા જીવનોના અલ્યાસમાંથી તારબીજે, તો કહેણું પડે છે કે "આત્માની માતૃભાવા" તો જીવન જ હૈ.

આત્માની જ્ઞાતા વાણી વાગ્દેખીદે કવિતાસંદર્ભ હૈ, જે દેખાઈ જ્યારું કાલ્યાસ્વરૂપો આત્માની માતૃભાવાદ્વારા જીવની જાય હૈ. કવિતાનો વાગ્દ્યાસાર, પ્રેરણાજન્ય હોતો સ્વર્દભૂ હૈ, જીવન જેમાં "કલાય ને કાર્યાલાય"ની જરૂર કલિને રહે છે. ભક્તોને જીવનમંડળીનું જીવન જીવન જેકતારાના તારે જીવનનોનું જીવન કર્યું હૈ અને મહારી જાતું હૈ.

૧. શ્રી ઉમાર્થકર જોશી.

-सावनी ऐक अनुभूतिना वस पर यज्ञने सावनानुकूल ऐमरु वाक्यान्वयो  
हे ने जे रीते सजनो अन्वना अनमर्त्त कठक्य यवा हे. इरी इरीरे -  
क्लक्कारमर्त्त अवतर्त्त ऐमर्त्त कोठ साव ते कोठ यज्ञ वधे पटे अरट; पछ  
तीर्वस्यानोमर्त्त इरहा यात्रानुमोर्त्त जे सजनोरे प्रैतिपृतिनी यात्रा करावी  
हे. गेट्वे ऐमर्त्त परसाधना यज्ञो पछु सावनुज्ञनमर्त्त सध्या हे. नाम  
श्रध्यातु अत यात्रिकोर्नी सावे सावे सजनोरे पछु यात्रा नारंभी हे.  
विश्वसरनी प्रार्थ्य ने यदेस्य युज्ज्वल्यु याधनाना जो करेलु इर्यान -  
विश्वयात्रीरो नेवा सजनिक्क-सेतोरे सजनमर्त्त वहाव्यु हे. प्रतीकोर्नी -  
पुषुक्षिध यित्रात्मक उक्तवा सजनमर्त्त हे. समाज्ञनना सार्व-मात्र  
यित्रो सजनमर्त्त जनोर्धी रीते प्रवोजाया हे. ये हित्ये क्षीर ने यज्ञो  
जने नेवा अन्व सजनसर्वकोर्नी वानी विश्विष्ट अव्याप्त मार्ये हे.

कवितानो अनोव्यापार ऐक अनमर्त्ती वीजामर्त्त ज्वानो हे;  
गेट्वे कविताने जो कोठ "अनोव्यात्रा" जातिमर्त्त भूके तो ऐमर्त्त नवाठ  
नयी. सजन ना रीते अनोव्यात्राज्ञातिमर्त्त ज्वेनार काल्य हे. हुनियाना  
काल्यसाहित्यमर्त्त काल्यसानयी यात्रा करनारा याउद जाणीता हे.  
यात्रा न सोराव्यु - गुजरातमर्त्त रावङ्गुहयो वहने इरनार सरमरीरो  
पछु हे. ना लोकोरे सजनने पर्जो जायी हे. सजनकविताने भन ने कठनी  
यात्रा करी हे. नेवा नेवु नरवु काल्यसवृप्त वीनु ऐके नही भले. सजन  
लोको धारा लभातु, लोको याटे लभातु ने लोकोर्यी अवतु ने झीलातु  
लोक्लामुहिक नेवु काल्यसवृप्त जायी न पाव्यु हे. सजनो यज्ञ नेके  
हेमाउक्लतवाणा सजनिकोर्नी समति नेवो हे. नेवा साव अनेकोर्नी  
हैयार्थमति नेवा हे, ऐमर्त्त प्रतिदिपो अनेकोर्नी अवनहेत्तिना राहिया  
नेवा हे. सजनकारोरे युरज्ञनना विश्व नेवा अनेकविध दाजो -  
अन्मान्या हे.

भजने के लिए कृत्त्वनार्थी नहीं। वाखी कविताएँ सर्वको तो आत्मने ही हैं, जो हेतु धरनारो वहसाए, पश्च जेनो धर्मकारो तो सनातन कान्तिमी सामें अहं ने अन्य रहेवानो, भजन जो रीते सनातनहेयानो धर्मकारो धरा माटे सनार्हु हैं, कवितानी वातिमक वातितनो उन्मेष तो भजनमार्ह है जेट्वे भजन जो हेतु स्वजन है, जेनी पारे उम्मीद-नीदन। के जाति-प्रज्ञिना सेह नहीं, नाम कविताएँ लोकशाही स्वरूप भजन हैं।

"मुझ कविताने नहीं होतो वाई के नहीं होतो वाई" २। या रीते केट्वार्क भजनों पश्च ज्ञारे वाई के धर्मविधिविनों प्रयोग वपनावे हैं त्वारे अमार्त क्षात्रत्व केट्वु जे सज्ज पूजन याच हैं, वार्हु भजन वाप्रदाविक तत्त्वभी पर हैं: बीजों भिन्न भजनों हैं।

कविता स्वरूप ने रहस्यमयी है जेम कहेवार है, स्वरूप रहस्यकाम जे भजनमु लक्ष्य है, जेना क्षुक्षुमार्त जपार रहस्यो पहेवा है, अति-प्रज्ञमार्तना। रहस्यो तो याक्षे पोतानी अर्थप्रसार जेतनार्थी शुद्धीत कर्हे हैं, जेट्वे न श्री वरदिव भाने हैं के कविद्वाराने भन क्षम जे न प्रेरणा साये न रहेतो यथा भाव है : या विधान भजनसर्वको माटे पश्च वार्हु है:

I don't think about the technique because thinking is no longer in my line. I don't bother about details while writing because that would only hamper the inspiration. I let it come through without interference. The inspiration provides what I want according to standing orders. The poems come as a stream beginning at the first line and ending at the last.

—श्री वरदिव

संस्कृत धर्मग्रन्थो, अने ग्रन्थ संस्कृत भाषाकाव्यालिंग साहित्यमां  
१९२ करीमे छीमे तो ऐमर अवननो काव्य विस्तार पडेको छ. अवननु  
आल्लु विस्तृत दर्शन संस्कृत साहित्यमां थाय छ. ये भक्तोमे उदात  
धर्मदर्शन अने उन्नत अवनदर्शन पोताना अवनमां भजितसाधनाथी बाटो-  
सात् करवानी भयाम्भो अमुखनी छे ने ये रीते परमात्मनी साराधना  
करता करता भजने चेत्यु छ. ऐक नानो विचार पछि ऐमहो साधनानी  
अमुख्यतिना। इति इषे व्यक्त अर्थो छ. पोताना कथने चाचोट करवा माटे  
हुन्वनी अवन ने साहित्यमाथी हुक्कातोमे सारनी सारनी लेख्यो भजनानी  
असित्यउत्तमां चैकल्प्यो छ. अम सज्जनमानो विचार, भाव, हुक्कातो.  
इपकुल अवनदर्शन के कल्पना। संस्कृत धर्मग्रन्थोनी पुल्यसूमिर्दु उल्लेक भरो समरलु  
करारे छ. ऐवा भजनोमां अमुख्यतिनी सम्माइ पछि होय छे तेम क्यारेक  
ऐमर भोलिक दर्शन पछि होय छ. तो क्यारेक मात्र अमुखरात्रु पछि होय छ.  
अम यातु भोलिक दर्शन छे त्यो तत्त्वात्मरोमी पैदे पाठ जोनारी  
आवृद्धिर्दि परियथ थाय छ. आवृद्धिर्दि शब्द जो वतियथोउत लागे तो  
आत्मसूक्ष्म के कोठाल्लु ऐमनामर्द्दी छे ऐम जडर कही चकाच्छ  
मेयातु दर्शन पछि ऐमनी भजनवाणीमां थार करे छ. भजनानी  
व्याख्या। वर्धता सा व्याख्या ज्ञानो पछि विचार कर्वो जडरी छ.  
अवननु अवनदर्शन "सत्य", "सिद्ध", ने "सुदर- ये त्रिष्ण शब्दोमां

### समाप्ति

अत्य: 1. भजनवाणीमां समाजनालवर्णियोनी चोऽय प्रतिष्ठानु  
सत्य छ. नीतिनो पुरस्कार अनीतिनो विरक्तार  
भजनोमां यसे छ. मानवशाउतनी भजतानु सत्य पछि तेमर्द्दी छ.  
2. प्रकृतिनो यैतन्यना। अविष्कारोमां वधी ज अवनसूचितो  
समाजावे ने निर्भय भावे प्रेम लिपाउत कर्वो. अम  
प्रभु सत्य भजनवाणीमां प्रतिष्ठानु करनु

शिव: १. मानव अवन्तु कल्याण शामर के दें सजनवाणीपर दर्शनवा-  
मर वाल्यु थे।

सुदर: १. मानव सौंदर्यमर देवी शशोनी रथापन। ऐसे २ -  
मानवसंज्ञ वधी अवन्तु जिमर उत्कृष्ट वाल्यु।  
२. जड़ सृष्टितु सौंदर्यमिति अवलोकन ने ऐ रीते श्रवण्ड  
भीमसा करवी।

याम सजन, सत्य, शिव ने सुदर्तु समालोचन के।

— सजन आत्मशुद्धिन्तु रसायन के। कारण सजनकारोने आत्मशुद्धिनी  
प्रयोगशाला नेहु याद्य अवन पकार कर्यु थे। ऐ प्रयोगशालामर सुध्य  
तो सावनी, अनुसवनी और जाननी विशेष यत्त थत्त आत्मानु कुण्ड  
तवायु थे। ऐम यत्त थत्त सजनना प्राणिय शब्दनु शोधन थयु थे। सजनमरो  
शब्द अवननी वेरण पर टीपावो थे। अवनस्थवनी लक्षीमर ऐ शब्द नगार  
कीने सजननो सावाकार पाठ्यो थे ऐ सुलबा नेहु सत्य नयी। आत्म-  
याति-सपन माणसनी निवैर लूपिका याजुपाजुला लोकोमर पंचुत्व  
ज्ञाते तो अमनी ४ अवनप्रतियामयी आत्मगैतन्यनो अनुसव लहने  
निष्पन्न थवेहु सजन अनेकोन। अवनने डेम न तारे। याम सजन अवनने  
सुध्य कुण्ड उत्तरार पारस थे।

क्षेत्रिक, आधिकारिक ने देवी विषयो सजननी धूम। थे।  
सरस्वती, गणपति, शुद्ध देव, शानकटात्म, उपदेश, वैराग्य, लोकयामो ने  
भक्तोन। अवनयरितो, गगन, श्रवणश्रवणमार्ड, आठि ऐम समाविष्ट थे।  
सरस्वती: "परथम यमनु शारदा, गणपति लालु पाय,

अविद्या वाली वापनो भक्ति देखो भोदी माय,"

"पृथम नमु माता। सरस्वती वीरु नमय शुद्धेश,

दीरु नमय उत्तु त्रिगुणा। श्रवण। विष्णु भणेश,"

**गुरुपति:** "सदा ज्ञानी सहाय रे, गौरी-पुत्र विदेश。  
पथदेव रक्षा करे प्रह्लाद, विष्णु, महेश।"  
"हुंदाजो, हुः असेज्ज्ञो सदाय आजे नेश。  
समर्पो लग्न लाभ दिये गौरी-पुत्र विदेश।"  
**गुरुदेव:** "प्रथम नमु गुरुदेवने आप्य निजन्त शान,  
ज्ञानथी गोविदने शोणाय। देहन्त मर्याद अलिमान।"  
"गुरु विना शान न दीप्ते गुरु विना भीषे न त शेष,  
गुरु विना संशय न। भीटे ज्य ज्य ज्य गुरुदेव।"  
"अन मारनकी कोषधि सत गुरु देत ज्ञाय,  
हुंचते परमानन्द को सो गुरु यरहे ज्ञाय।"  
"गुरु गोविद दीप्तु षड कीचकु लाञ्छ पाय,  
विलारी गुरु देवकी दिय। शोविद ज्ञाय।"  
"नाम नेमै रम रिय। जानेगा ज्ञ कोइ,  
जाङ्क सहगुरु पूर। भीवा ताङ्क मालुम होय।"  
"ऐक शब्द गुरु देवका ताङ्का अन्त विदार,  
थाके मुनिन्न पतिता देह न पावे पार।"  
**शानकेश:** "ह्या प्रीत कायकी लिप्त षड दीड ज्ञाय,  
शायी प्रीत शेवालकी ज्ञ खेमी सुकाय।"  
"हांडा ज्ञानी माइकी पातालमर्त तारो वाय,  
रतन जेवी अणिय। क्यु न देणी ज्ञाय।"  
"दीडा ज्ञानी माइकी पातालमर्त मारो वाय,  
इण्यी याकी करमकी तो क्या। करे उरवार"  
"करत कुर्जे याहत कुशल गेही छो अक्षोद्ध,  
समुद्र को भैया धट्यो ज्य दावषु वस्यो पडोय।"

"भूत तेहो पड़ा नहि पड़ा त्यो नहि भूत,

भूत पड़ा दोहु रथे यो हुमनकी रीत।"

जगनां विविध इमको अने प्रतीकोः

"सुदर्शनी शूदरी, सर्वसत् शोधारण शूदरीः

महे ब्रातमरामनो वड ..... शोधारण।"

"रातो रथ भुजठो गेनो पूर्ण लाल्यो पास,

अनति जुगे नहि उमटे बाली गाय छे लंत मूलांड़ा" - मूलांड़ा

"मानी की चूहि पंचनका धारा, शीतल चीतल नव मास ज लागा" - कवीर

"कीरी कीरी शीरी शहरिया, काढे का ताना काढकी भरनी,"

कोन तारये कीरी शहरिया" - कवीर

### हानकटाक्षु निष्पत्तः

"हया धरम नहि मनमें मुण्डा क्या हैंगो हरपनमें

पृष्ठो बाधो, केश लमारो, तेल नाथो हो लनमें

अे ही वक्ष पर पास उगेगा गायो चरेगी लनमें - मूण्डा

अर्थे की डाल पर कोयल राण, तपकी राण लनमें

परबाली को परमें राण, तपकी राण लनमें - मूण्डा

काल्य डेरा नाल भाल्य शाला डाला समदरमें,

धरभी धरभी पार उतरिया पापी भूडा पलमें,

झुरडा पाती जोलके लटके, यला जावे गेक पलमें

कल कभीरा .... रही गहि की अनमें" - कवीर.

"धोडी धीरे गडी उडी रे मेराम गडीवाला,

गडी मारी अन्ध रंगीली, एक जोड़वा घेयार,

हँकनवाला तेल छपीला, येठनवाला लाला,

जाँड़ी छूटी रसमें ने अखल पड़या। छे दूर,  
शीधा चाहुँदा जो भिले तो पहोचाउ छार,  
धोड़ा छूटया रसानये ने भी पड़यो पोकार,  
हस दरबाजा वध कर्म पछ नीकली यथो असार।  
जीतर भाँडु जाज्हु तूटी यथा। बहु तार,  
जीतर कियारह क्या। उरे ऐरो यथो बजावनहार।"  
"उँग छो कर पहे कीवाया जिल्या। छलारे बहु झेकी,  
लीतरमें हुल लेह न पायो रामामडी मुरथी पटकी।"  
"पाय छायकी जनी असीतर न्यर अनेक निमाइ लेणा हुवा।  
पीर ऐग्यरनो लेह न जाइयो पछी वर्णु दह दह मुवा।"  
"उँगा ताल ने जाँड़ा तप्परा, त्यर अनेक लग्तु लेणा हुवा।  
जावसजितनो लेह न जाइयो पछी धूषी धूषीने मुवा।"

#### पाँडेने:

"हुँ घ पडे तो देवनांडु चमरे, नालियेर यन यडावे।  
इटी रे कायली देवनांडु चडावे, गोला वाय पटडावे।"  
"माँडी का तो नाग जाया, ताँडु दूध पिलाई।  
साया नाग जब परमे ऐहा, लह धोके धमराई।"  
उपदेशः समा-जडग कर धारो सन्तोषमा जडग कर धारो रे  
सत-समरोर रे बानु-परछी, सान-पोडो शणगारो  
लक्ष-लगाम ने प्रेम-पलाषो, चितनो यायुक मारो - मारा चंतो  
धीरजनी दाल जजनना भाला, अस्यांप्तर चारो रे,  
जाया-नमरमर भनमेवासी, देये करीने विदारो - मारा चंतो"

#### बेरायः

"पहेलो विचामो परने अण्डे, बीजो विचामो उपा पहार,  
त्रीजो विचामो गायने ओदरे, बोथो विचामो चमचानः

બેટું કરમઠડીમાં ખાડકયારું રે, માથે મેલી જીવનરાણી હે છ. "

"ધૂંધૂંની ને પાછી । બંગ ચલેંછી ને રેન કર્ટેંઝી દોઢો વાવરું છ

અંગા ને જમા મારા ચરણ પણાળે, વસ્તિ લાલેની દુધ જાતાં છ. "

### કથાખ્યાતિનાત્મક ભાજનો:

"ખીર રે પુકારે સુજા જાનરાં, નહિ રે બેનુ ને નાણ મેલિની.

નહોતા જે દી" ધરતી વકાય રે; યદો ને સૂરજ જેદી" દોય નહોતાં  
તે દી" મહાલેકધારી બાપોન્યાપ રે.

"પાપ વાદુ પરકાણ..... નેલાંકરી હે વિયાર."

માલદે - ઇપાદેશ, નેલબ-તોરલ, લાયા-લોયણ, ગોપીયદ-  
લરધરી, કાયદા-કાયની, ચલેયા નાખ્યાન, હરચદ પુરાણ વગેરે કથા -  
જાનો વરીકે જાણીતાં છે.

જાં જાનનિષ્યાના વ્યાપ વરીકે વાટણું વસ છે.

જાટાં નિષ્યાનિષ્યાન પરથી જાનનોની શરીરનો પરથો મળી  
રહે છે. જાં બહેલી જાનનાણીને આપણી લોકશાળાનો તરીકે જામાનયાં  
નેતૃક અનનનાનાનાં બીજ વાલ્યા છે. ધર્મના ભત્યતિરિ જાનનાણીને  
બસ્થિત નથી. બેસ તો નસ્થિત છે, માનવને પરમાત્માનું દ્યાન કરાનારી  
જાતમણું. માનવની જીત: પ્રેરણા નિત્ય જનાગ રહે હે રોતે ચર્ચધમોના।  
શદ્ધાને જાનનાણી ગોલે હે બેટદે જાનોને જ્યુક જ પણ, ચુપુદાચ કે વાદાં  
પુતીક તરીકે સ્વીકારતી વણો ધૂષ ચાલેલી રાખવાની જરૂર છે.

જાં પદ્ધતિદાય, ચહેરાની ને માર્ગર્પથીનોની વણ્ણી જાનમાં ચાલ્યાંનિક  
મૂલ્ય તરીકે જ માડ જાણા નેલી નથી. બેટું જાનો પ્રલુદ્ધનાં ચાધાં-  
માંગ તરીકે સ્વાચ્છ મૂલ્ય મારે છે. હથોગના પ્રકારો ને બેની  
ચાલાનાલિ પણ જાનમાં જાવે હે ત્યાં ચાધાનાનું હે: સ્વર્ણ દ્વારે હે;  
જાનનાણીને ચાધાનાના બેના જેનેક માનોનો નિર્હિંદું હોં છે. ને કોઈ  
પણના દાદીબાન નથી કંઈ રહેતી. ચાયાં જાનમાં ચર્ચધર્મ, ચર્ચપણ ને-

—સર્વસિદ્ધાંતચર ખિનુ વાટસાથ રહ્યુ છે; ના વાટસાથ જ ભજનની —  
બાતરસપત્રિની મૂલવાણી<sup>ગુરુ</sup> મહત્વનું છે.

ભજનનું ભાવ વિરોધ વિપુલ છે; અત્ત અનેક ભાવોનું ચર્ચણ અનેક  
ભક્તોએ પોતપોતાની સ્વા પ્રમાણે કર્યું છે. મેટલે ઉચારેક બેમાં ચર્ચિત-  
ચર્ચણ જેણું લાગે છે. કયારેક બેમાં અન્ય ઉચિતોને ભાવાનુકરણો ને  
શાબ્દાનુકરણો પણ ધ્યાય છે. પણ ભજનનો વિષય જ બાધ્યાત્મ-નારતનો છે.  
મેટલે અનુભૂતિની નિષ્પત્તિની વાખ્યમાં દરેક ભજનકર્તા સમાન ચૂરો કાઢે  
તો એ ક્ષમ્ય છે; બાની ને દોળાં અનુકરણોમાં પણ બસુક દોળ ભજનકર્તાને  
પણ પ્રિય હોય છે; મેટલે એ જ દોળમાં અન્યના ભજનો ચાલુ નેય એને  
ગમે છે તેમ બેમાં પોતાની આત્મસરગમના ચૂર પણ એ છેડે છે. એ રીતે  
બેનુ મૌલિક ભજન દા શાબ્દપુયોગોનું પણ લાગે. જિતમ ભજનકર્તાનો  
પોતાના સંજમમાં અનુકરણનો તત્ત્વો સ્વાનુભૂતિની ભર્તીમાં યોગયી દિને  
બધુ મૌલિક કૃતિઓ કરજાની શક્યા છે. ઉચારેક ભાવ ને શાબ્દ જિન-  
સિનન. ભજનકર્તાના લગભગ સમાન લાગે, અત્ત બેમાં બેમાં "માર્મિક  
ને રહસ્યગામની" સ્વાનુભૂતિનું તેજ અધર્થ રહેતું નથી. મેટલે જ બાદચીન  
એક ભજનિકે લોકખલોની ભજનવાણી માટે કહું છે :

" વાત્મરચાયણમાણી ગજાઈ ગજાઈને નારે વાણી માચલાની  
અનોયરતામાણી વહાર વાદે છે. ત્યારે ગે કેવી માર્મિક ને રહસ્યગામની  
જી છે, તેનો દાખલો આપણાં જૂના ભજનો છે. .... પ્રાણી, ઈલ્લારી  
પરચા, શ્રદ્ધાભાગિતાની ઉચોટી, નિગૂઠરહસ્યમયતા, હરિચરણની શરણાગતિ,  
ત્યાગ-કૈરોગ ને તિતિક્ષા ને છેવટ પરમાત્માભાગિત ચાણેની બેકાત્મ  
તદ્દાકારતા એ આપણાં સ્વેચ્છાભિનોનું પરમ લક્ષ્ય છે. ના લક્ષ્યે દેખોને  
સહુના જનાંદ્યા છે. "<sup>૩</sup>

૩. સુધ્યાનું "ધીરો-ખોજો" -રેઝિયો વાતાવાં ૧૯૫૫.

—શર્વ કલાંગોના આનિષ્ટાર પાઠી આત્માની જ પુણી સંજ્ઞક્ષાંતિ રહેલી હે. અને આત્માની માટે જ કવિતાને "આત્માની માતૃસાધાં" ૪. "આત્માની અમૃતા કલા" ૫. કે "આત્મશ્રી" ૬. ગણેનામણ ચાર્યક્ષય હે.

અવનનું ધોય, આરણું — જીતરના ભનોરથ ભજનમાં જ વ્યક્ત થાય હે. એકતા ને જીવાંદિવા તો ભજનનો સંમ હે, ૨૬ હે. અધધી અધધી કરીએ ભાવચિન્દુણ વદ્દાનું રહે. અતિય ધૂલપણિત સ્થાયી હોય. એમણે મસ્તીનો કેદ જીતરે હે ને ભજન અનધૂતનો મસ્તાપિયાલો જી રહે હે. ૩૦૭. જીતનનું સાધનાંદન ભજનિકો માણી શકે, એવો એ મસ્તાપિયાલો હે. ભાવાદેશને અનેક કિધ દર્શનોમણ વિસ્તકત કરતો એમણે પૂર્ણાંતેલી હે. એ. ૫૧૨૨માં સબાનુલબદ્ધીલ ભજનોમણ સબાનુલબ પણ બોલો નથી હોતો. એમને ગુંડ અવનનું અનુતર સરેદાન હોય તેમો જ બેની મજા માણી શકે એમ હે.

ભજનોમે પુનઃ પુનઃ ચાલાંદાંધી ને વાવાથી અતિર શુદ્ધિ અનુભાવ હે. અધ્યાત્મા ભાવાર્થ ને મૂલ્યાંનાની ચિદ્ધિ ભજનિકાના પોતાના અવનમાંથી પુકે હે. ભજનના ચાલમણ અનેક ભૂમિનું અવનતત્ત્વોની ચેતનમણ સાધની લાયકનો હોય હે. એ પાછી શેકાય તો જ ભજનને માણનું જાણાય. જુદાંત, શ્રદ્ધાં, કરુણા ને અપાર રહસ્યોને સમજવાની જિસાંચાંદિટ ભાવસ્થક હે.

ભાવચ્યાંક રાખ અને સુરાવટની વલ્લીનતા. ભજનમણ જાયે હે. એનો મર્યાદાંધી નર્ધાનનિ, એવો કુદરતી ચાલપુસાંદ, એની મીઠાસ, એનું કાદુણસ, એનું અસરાંજબ — એ રોં વાનાં લદયને સોસરબા વીધી જાય એવા હે. આત્મતત્ત્વ વયર હે એવો અનુલબ ચચાં કરે હે. અવનનો પ્રવાણ એક અનુત ચાલિબત હે. એમણે ચચાંરી દુદિલની કીર્તિ, પ્રતિ ૪૧, ૫૧, ૬૧, ૭૧ — એને હોમી દેનાર લેતો ચાપણું પડોભર ભજનસાગરના છું આત્માની હે. એ વલ્લાંધી — ૪. ઉમાયકર જોખી. ૫. વાનદાંધીકર ધૂલ. ૬. — દેચળજા પરમાર.

प्रतीति जन्मे हे के कवि इन्हा हे अने तेरे सधो रथो अने सर्व सभये  
चौंदर्य देखाय हे. यातु राजदेशयी पर ऐं भानस केवलवानी ने  
सहित राजवानी जरूर हे. कैसः करण निर्भये इतीमूल थवा। मर्ते  
ये भजनमु अग्रुक लक्षण हे.

स्थूल अवनने न बाजीये तो लावन। अवनमु बोज्य योर घडे हे.  
प्राणोनी भरती एवे प्रेरणानी वीजानी वल्ल न करे हे. ये भानसोनतिनी  
वानद अरोरो हे - जे रत्नसदार अने विद्युत्सेवयी अनेकधा वधी यस  
हे. या हेतिवे तो लज्जन लावन। युज्ज्वल हे. येमर्त राजनयात्रा करता  
उज्ज्वोक्तो अठित-प्रैमरस-वल्ले कामनिगम करता येमर्त अवननी हु वधु  
सायी अने लावसदी रहे हे. येल्ले न परमात्मसत्त्वानी वत्सलमूर्तिमु  
प्रैमसठितसरित द्विन धर्य करे हे. व्यठितत्व करता व्यमितितत्वानो  
भडार लज्जन यायी अक्षी रहे हे. लज्जन भानवत्तिनी विद्याज्ञ सहुद्वय-  
तातु प्रतीक हे.

कविहृदयने होय येवी याई। तिमड असीति, धूधवाट भजनिकने  
पशु होय हे. येमर्ती ये भजनमर्त शाति शोधे हे. या द्वायामर्त अवननी  
प्रतीक पदा लज्जन अने यन अनी रहे हे. या रीते लज्जन ये लवक्त-  
-रवा करता अनुसवनी मूडी अनी रहे हे, त्यारे वज्ज्वलप ऐं लज्जन ये  
न भजनिकनो प्राप्त हे. सोहम्प-छनि भतिर वाह्य अवनमर्त युज्यां करे हे.  
तु यातु दिवतीय हृदय हे - येम साम सीताने कहे, येम भजनिक भजनने  
वीनु हृदय न कहे तो जनवाठा। अवन येक लज्जन भानीने अवनारी वति  
भरपरी अने वाउल यात्माने भजनरूपे प्रत्यक्ष माने हे. कामामर्त "मिहु  
पणी, यातु पणी" तरीके अग्नीता। वाउलो लागा। अर्यमर्त उडती ने  
गती भजनकवितानु न प्रतीक याप्तुने लागी ये स्वासादिक हे. येमनो  
सदेशो न हे के अवन येक लज्जन.

ભજન કર્યું. હુદોધ ને અકબિતા હોઈ યકે છે. પણ એ અવનનું અનુભૂતિમન જાન છે ને મેળી એ સદા જિયતું અવન છે. માલસો, મેળી અવનરીતિ, મેળી કરુણાદ્વારા એ બધું બલભાતા ને બપકવતાનું જાન કરાય-  
-નાર સત્ત્ય છે. તો અકબિતા, ચાહિત્ય, ઉલા સંસ્કૃતિ, એ કાળમાં વિલીન અનાર માનવની દેન છે. એ હુદીટે ઉલા, ચાહિત્ય ને સંસ્કૃતિ પૂર્વતાની ચાડા છે.

અકબિતા એ ઉધ્રણાંત્રી છે. તો મેરી પુત્રોક સ્વરૂપો પણ જિર્ણ-  
-ચાડા છે. ઉધ્રણન ચાડાનું પાયેલ કેટલું છે એ જ અજાનની કચોટી છે. હુદોધતા ને ઉપહેદ્યપ્રધાન ભાવપદ્ધિતયોમાંથી પણ એ અવનની ઉધ્રણાંત્રી  
હુદીટ લાઘતી હોય તો એ જાન ચાર્ચક છે. અનુભૂતિની એક લકીર પણ  
એ ચાલ્યાને અજાણે તો એ અકબિતા મેળી બધાં સ્વરૂપો કૃતાર્થ જો  
છે. એટલે જ એકાદ પડીત સ્વર્ણસૂ હોતાં વાકીની પદ્યરચનાને દ્વારુંતિમત  
નેતનદ્વારા જાણો હે છે. મહાકાવીન ભજનોની ટેક : પ્રયમપદ્ધિતઃ નાનો  
મહાદ્યો અનુભૂત કરાવે છે.

ભાવના ને ચાલ્યોમાં રાયનારી અકબિતા જ ઉધ્રણઅવનરીતિની  
હોઈ યકે, અન્ય નહિ, મેળ માની શકાય નહિ. વાસ્તવિકાના રાયી  
અવાચીન વિશ્વાંહિતની ધ્યાની મહાત્માની કૃતિનો નિકૃષ્ટ અવનનું  
બાદેખન કરીને પણ પરોક્ષ રીતે તો અવનને એક ડળ્યું જાગેણ તો વધાર-  
-વાનો ઉકેલ રહ્યે છે. મેળ અવનની દુર્દ્યા, અયારિતિ, મોતિનું  
વાસ્તવિક ધ્યાન છે; અલાય મેળું ધ્યાય તો મનુષની પ્રાપ્તિ જ હોઈ યકે,  
અદે પરોક્ષ રહ્યે.

ભજનતો ચાલ્યાનો પદ્ધો છે. રદેનકાનું પ્રલીક છે. એકાંશોયિ  
મેરી નની કલારૂપો ચહેલ રીતે ચધાતાં નની છે.

ભજન એ માટું ચાલ્યાનાન નથી. એટે ચમાજ ને રાજ્યની જુલ્ય-  
-જરાયીરી ચામે જાણો પણ કરો છે. કલીર ને મહિદુ, ચાંદો, જોયે

નેબાં અનેક સંજ્ઞોની ભજનવાણી, જાની સાક્ષી છે. કંદિની ધોખણાં  
પણ ભજનનાં "આગમ"-સુન્દરૂપમાં નોંધાણી છે. દેવાયત પણિત, નેલો  
બાબો, ચરમણ કાપડો બગેરેનાં આગમો લોકકંદિની પ્રતીકો છે.  
કારણ સતો સમાજ અબજનનાં હુદ્દાઓ તરીકે જીવનથોધ્યાઓ હતાં.

ભજનમાં માત્ર શાંતિરસનું જ ગાન નથી. યેમાં અન્ય જાઠ રણોદ્દું  
ભાવુનાલક્ષી નિરૂપણ છે ને શાંત રસ તો ભજનમાં શિરમોર નેલો છે.

માનવ માટે પરમાત્માદ્વારાની જરૂરી, હૃદયનાં ભાવસોદ્દર્ય  
દ્વિદ્વારા કરાવનાર ભજન છે. જીવનનું પરમ આદ્વિતાસન તો કંબિતા-કલા  
બાપી શકે. યેમાંથે આશા ને જાનદાની જારી તો ભજન બને છે એટલે  
જ ભજનિકોનું જીવન પરમાત્માથોધન બની રહ્યું.

કંબિતા તો અમર બેલ છે આશાની યેમ કહેતાં જ આત્માની અમરબેલ  
એટલે ભજન યેમ કહેવાનું બન થઈ જાય છે. જેનાં સેવનથી તો ભજનિકોને  
જીવનકંબિનો આશ લાયો છે. આપણાં અનેક ભજનકલાંયો સાચા અર્થમાં  
કબિ છે, કારણ કે કબિ એટલે સત્ય, શિવ ને સુદરનું પૂજન, અર્થન કરનાર  
દ્રોષ્ણા છે. એ પગતમાં મહિદર, ગોરાય, ભરૂછરિ, ગોપીર્યદ, નરસિંહ, મીરા, અણો,  
દેવાયત પણિત, ધીરો, જોજો, હરભાઈ, રાખત રણ સિંહ અને અન્ય -  
બિરાને છે. યેમણે આગમનાં રહસ્યો છી કેલતાં આર્થાની પ્રેમબલ્લીનું રીતિન  
ચારાંથું છે; ને જીવન સહ્ય બનાવ્યું છે; આત્મજીવનની તરસ કુઝાંની છે.  
તર્ફાનાને કંબિતાદ્વારે કોળાંથું છે, સર્વપણું માં આત્મસિદ્ધ માણી છે,  
ભાગિતરસનો ખાલો પીધો છે. અને પાયો છે. યેમને બન ભજન યેમની  
આત્મયોતનાનું મહિયર છે.

૭. ભજન યે કારણું જીવાણી વાળન નથી, યે કંબિતાસન્દર્ભમાં જાનાતન -  
તાંકાત ભરો છે; ને શાંતિતસ્થાન્ય કેવળ વેરાંય અને આધ્યાત્મિકતાનું  
જ ન છિ પણ આત્મસપ્લાનુંથી જીવનની સામાન્યની વિષમતાનાં  
અધ્યાનિકઃ ઘરું જોતાં તો સર્વકાળિનઃ ભાવોનું પણ ગરવું ગંભીર વાળન  
બની શકે રહેની છે. તે ઉકીકરે જોઈયે તો સૌરઠી ભજનિકોણે પેરી પેરી  
ભજનવાણીનાં પ્રયોગો, વીર, રૌક, કરુણ, શૃગારે બગેરે સર્વ પ્રકારના રસોને  
પ્રકાર કરવામાં કયું નથી સમજીશ્વા? —શ્રી કબેરર્થદ યેપાણી "અકતારો"

५५ : २ :

શુદ્ધાત્મકી ભજા શુદ્ધાત્મક શરૂઆત